"काव्यहेतु"

* काव्यहेतु का मतलब होता है- काव्य लिखने का कारण ।
* काव्यहेतु की परिभाषा इसप्रकार का है- "काव्यहेतु वह उपादान है अथवा तत्व है, जो काव्य रचना का कारण है। काव्य रचना की सामर्थ्य प्रत्येक व्यक्ति में नहीं होता। यह केवल वही व्यक्ति में होता है, जो विशेष प्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न होता है। यह प्रतिभा ही काव्य का हेतु है। भारतीय काव्यशास्त्रियों ने इसके अतिरिक्त अन्य हेतुओं का भी वर्णन किया है।

विभिन्न आचार्यों ने काव्यहेतु के बारे में विभिन्न बातें कही। जैसे :-

ⓐ दण्डी :→ आपने काव्य के तीन हेतु माने है- (i) नैसर्गिकी प्रतिभा (ii) निर्मल शास्त्रज्ञान (iii) अमंद अभियोग (अभ्यास)।

ⓑ रूद्रट और कुन्तक :→ उन्होंने भी तीन काव्यहेतु माने है- जैसे :- (i) शक्ति, (ii) व्युत्पत्ति, (iii) अभ्यास ।

ⓒ भामह :→ भामह ने तीन काव्यहेतु माने है- (i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास

ⓓ वामन :→ आपने भी तीन काव्यहेतु माने है। जैसे -ⓐ लोक ⓑ विद्या और ⓒ प्रकीर्ण । प्रकीर्ण का छः उपभेद आपने माने है- (i) काव्यों का अनुशीलन (ii) अभ्यास (iii) गुरु द्वारा शिक्षा प्राप्ति, (iv) उपयुक्त शब्दों का चयन, (v) प्रतिभा (vi) चित्त की एकाग्रता। (प्रकीर्ण, अर्थात काव्यों का अनुशीलन, लोक का मतलब - समाज या लोकव्यवहार का ज्ञान)

ⓔ मम्मट :→ "शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्
काव्यज्ञ शिक्षायाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥"

अर्थात,- "शक्ति (प्रतिभा), लोकव्यवहार, शास्त्र तथा काव्य आदि के अनुशीलन से प्राप्त निपुणता (व्युत्पत्ति) और काव्यज्ञ (काव्य के ज्ञाता, काव्य को जाननेवाला) की शिक्षा से अभ्यास काव्य के मर्मज्ञ व्यक्तियों से प्राप्त शिक्षा के द्वारा अभ्यास।

उपरोक्त सारे हेतुओं में तीन वर्ग है—
(i) प्रतिभावादी (ii) समन्वयवादी (iii) अभ्यासवादी आचार्य ।

संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्यहेतुओं पर अधिक

विवाद नहीं है। विवाद है उनके तारतम्य, महत्व और प्रभाव के विषय में। इस विषय में आचार्यों के तीन वर्ग है। जैसे :- (i) प्रतिभावादी आचार्य, (ii) समन्वयवादी आचार्य, (iii) प्रतिभाइतर आचार्य।

(i) **प्रतिभावादी आचार्य** :→ इस वर्ग के आचार्य प्रतिभा को ही काव्य का मुख्य हेतु मानते हैं। वे व्युत्पत्ति और अभ्यास को प्रतिभा का ही संस्कारक स्वीकार करते हैं। इस वर्ग में राजशेखर, हेमचन्द्र, जगन्नाथ का नाम उल्लेखनीय है।

(ii) **समन्वयवादी आचार्य** :→ इस वर्ग के आचार्य प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास तीनों की सम्मिलित रूप को ही काव्य का हेतु मानते हैं। इस वर्ग में रुद्रट तथा मम्मट का नाम उल्लेखनीय है।

(iii) **प्रतिभाइतर आचार्य** :→ इस वर्ग की आचार्य प्रतिभा को काव्यहेतु में महत्वपूर्ण स्थान तो देखे हैं, किंतु उसके अभाव में भी काव्य रचना की बात करते हैं। इस वर्ग में दण्डी का विशेष उल्लेखनीय नाम है।

प्रतिभा :→

प्रतिभा वह शक्ति है, जो किसी व्यक्ति को काव्य लिखने अथवा काव्य रचना के लिए समर्थ बनाती है। प्रतिभा ही कवित्व का बीज है। जिसप्रकार बीज के अभाव में वृक्ष की कल्पना नहीं की जा सकती, उसप्रकार प्रकार प्रतिभाहीन व्यक्ति काव्य रचना नहीं कर सकता। यदि वह काव्यरचना में प्रवृत्त होता है, तो उसकी रचना उपहास ही की योग्य होगी।

प्रतिभा की परिभाषा :→

भट्ट तौत :→ "प्रतिभा उस प्रज्ञा का नाम है, जो नित्यनुवीन रसानुकूल विचार उत्पन्न करती है।" "प्रज्ञा नवनवोन्मेष-शालिनी प्रतिभा मता:"। प्रतिभा वह प्रज्ञा है (शक्ति, ताकत, सामर्थ्य) जो रोज नये नये रसानुकूल विचार और भावों का उत्पन्न करते हैं।

प्रतिभा के प्रकार :→

अभिनवगुप्त के अनुसार प्रतिभा के दो भेद हैं — (i) आरव्या और (ii) उपाख्या।

आस्था कवि के मन में होती है, उपास्था पाठक या सहृदय के मन में होती है। राजशेखर के अनुसार प्रतिभा की दो भेद है – ⓐ कारयित्री प्रतिभा ⓑ भावयित्री प्रतिभा। कारयित्री प्रतिभा कवि में होती है, और भावयित्री प्रतिभा सहृदय में होती है। कारयित्री प्रतिभा की भी रूप तीन है — (i) सहजा (ii) आहार्या (iii) औपदेशिकी

(i) अभिनव गुप्त

प्रतिभा
- आस्था
- उपास्था

x x x x x x x

(ii) राजशेखर
- भावयित्री
- कारयित्री
  - सहजा
  - आहार्या
  - औपदेशिकी

(i) सहजा :→ यह प्रतिभा सहज और स्वाभाविक रूप से ही होती है। यह प्रतिभा आत्मजात होता है।

(ii) आहार्या :→ यह प्रतिभा शास्त्रों के अध्ययन, लोक या समाज से मिला हुआ ज्ञान आदि से प्राप्त होता है।

(iii) औपदेशिकी :→ यह गुरुशिक्षा, तंत्र-मंत्र या गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है। काव्यरचना के लिए प्रतिभा का होना अनिवार्य है।

☆ व्युत्पत्ति :→

व्युत्पत्ति का अर्थ है – पाण्डित्य अथवा विद्वत इसका संबंध ज्ञान से है। यह ज्ञान दो प्रकार का है – ⓐ शास्त्रीय ज्ञान ⓑ लौकिक ज्ञान।

ⓐ शास्त्रीय ज्ञान :→ इस ज्ञान के अन्तर्गत काव्यशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कामशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, कोश, वेद, पुराण, उपनिषद आदि आते हैं। इसका अच्छी तरह ज्ञान होने से ही कवि अनेक दोषों से बच जाता है। शास्त्र अध्ययन से यह ज्ञान प्राप्त होता है

ज्ञान
- शास्त्रीय
- लौकिक

Date 10/9/07
Page 10

(b) लौकिक ज्ञान :→ समाज से प्राप्त ज्ञान को लौकिक ज्ञान कहलाते हैं। लोक के ज्ञान के बिना शास्त्रों का ज्ञान अधुरा ही नहीं, भयंकर होता है।
लोक और शास्त्र के अतिरिक्त कवि की विभिन्न काव्यों के परम्पराओं अथवा काव्य आन्दो-लनों का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। इसप्रकार कविता लिखने के लिए व्युत्पत्ति अथवा निपुणता आवश्यक है।

☆ अभ्यास :→
इसका अर्थ है बार बार प्रयोग अथवा निरन्तर प्रयत्न करते रहना। निरन्तर काव्यरचना का प्रयास करते रहना ही अभ्यास है। काव्य में सुन्दरता लाने के लिए अभ्यास आवश्यक तत्व है। इसके अभाव में अनेक प्रतिभाएँ कुण्ठित होकर नष्ट हो जाती हैं। अभ्यास से काव्यरचना में सुधार आता है और वह रोज लगातार परिमार्जित होती जाती है। काव्य रचना के लिए, काव्य में सौन्दर्य लाने के लिए अभ्यास की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं, कि प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास तीनों का समन्वय ही काव्यरचना का हेतु है। ये तीनों अलग अलग नहीं, बल्कि मिलकर ही काव्यहेतु मानते हैं। जिसप्रकार वृक्ष के लिए बीज, मिट्टि और जल की आवश्यकता होती है, उसीप्रकार कवितारूपी वृक्ष के लिए बीजरूपी प्रतिभा, मिट्टीरूपी व्युत्पत्ति और जलरूपी अभ्यास की आवश्यकता है।